भारतवर्ष की अवधारणा, भौगोलिक विविधता एवं प्राचीन भारत

1. भारतवर्ष की अवधारणा

परिचय और नामकरण

- **अखंड भूमि:** प्राचीन भारत के कवियों, दार्शनिकों और ग्रंथकारों ने इस पूरे देश की कल्पना हमेशा एक 'अखंड इकाई' के रूप में की है। हिमालय से लेकर समुद्र तक फैली इस भूमि को एक सार्वभौमिक राजा द्वारा शासित क्षेत्र माना गया है।
- **नाम की उत्पत्ति (भारतवर्ष):** इस विशाल उपखंड को 'भरत' नाम के एक प्राचीन कुल के आधार पर भारतवर्ष (भरत का देश) कहा गया और यहाँ के निवासियों को 'भरतसंतति' माना गया। पुराणों के अनुसार, दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र राजा भरत के नाम पर यह नाम पड़ा।
- **भौगोलिक विस्तार:** उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र (कन्याकुमारी) तक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र घाटी से लेकर पश्चिम में सिंधु घाटी तक फैले क्षेत्र को प्राचीन काल से एक सार्वभौमिक राजा द्वारा शासित क्षेत्र माना गया है। ऐसे राजाओं को 'चक्रवर्तिन्' की उपाधि दी जाती थी।

राजनीतिक एकता का इतिहास

- **अखंडता के प्रयास:** प्राचीन काल में देश में राजनीतिक एकता को कम से कम दो बार पूरी तरह स्थापित होते देखा गया:
  1. ईसा पूर्व तीसरी सदी में सम्राट अशोक का साम्राज्य दक्षिण भारत को छोड़कर पूरे देश में फैला था।
  2. ईसा की चौथी सदी में समुद्रगुप्त की विजय सेना गंगा की घाटी से लेकर तमिल देश की सीमाओं तक पहुँच गई थी।
  3. सातवीं सदी में चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को हराया था, जिसे उत्तर भारत का अधिपति माना जाता था।
- **राजनीतिक संरचना:** भले ही देश छोटे-छोटे राज्यों में बंटा रहा हो, लेकिन विजेताओं और सांस्कृतिक नेताओं ने हमेशा भारत को एक भौगोलिक इकाई माना।

भाषा और संस्कृति की एकता

- **भाषा का विकास:** ईसा पूर्व तीसरी सदी में देश की आम भाषा प्राकृत थी (अशोक के शिलालेख प्राकृत में हैं)। बाद में संस्कृत का विस्तार हुआ। गुप्त काल के बाद राजनीतिक रूप से देश बंटा हुआ था, लेकिन सरकारी और धार्मिक दस्तावेज संस्कृत में ही लिखे जाते थे।
- **सांस्कृतिक महाकाव्य:** रामायण और महाभारत का पठन-पाठन दक्षिण में तमिल देश से लेकर उत्तर में तक्षशिला और वाराणसी तक एक जैसी श्रद्धा के साथ होता था। क्षेत्रीय भाषाएं अलग थीं, लेकिन सबका मूल सांस्कृतिक सार एक ही था।
- **पौराणिक दृष्टिकोण:** पुराणों में ब्रह्मांड की परिकल्पना और जंबूद्वीप का वर्णन मिलता है, जिसके केंद्र और दक्षिण भाग में भारतवर्ष स्थित है।

भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक विशेषताएँ

- **सीमाएँ:** भारत एक स्पष्ट भौगोलिक इकाई है जो उत्तर में हिमालय और बाकी तीन दिशाओं से समुद्र से घिरा है।
- **दर्रे और आवागमन:** उत्तर-पश्चिम में खैबर, बोलन और गोमल जैसे दर्रों के जरिए प्राचीन काल से मध्य एशिया, ईरान और अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध बने रहे। इन रास्तों से हमलावर और प्रवासी भी भारत आए, फिर भी हिमालय और हिंदूकुश पर्वत देश की सांस्कृतिक पहचान को रोक नहीं पाए।
- **नदियाँ और बस्तियाँ:** भारत का मध्य भाग महत्वपूर्ण नदियों (गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि) से सींचा गया है। शुरुआती बस्तियाँ जंगलों को काटकर बसाई गईं। लोहे के औजारों के विकास से जंगलों को साफ करना आसान हुआ, जिससे गंगा-सिंधु के मैदानों में खेती और बस्तियों का तेजी से विस्तार हुआ।

'इंडिया', 'हिंदू' और 'हिंदुस्तान' शब्दों का उद्भव

- **सिंध नदी का प्रभाव:** बाहर से आने वाले लोगों (यूनानी, ईरानी, चीनी) के संपर्क से इन शब्दों की शुरुआत हुई क्योंकि वे सबसे पहले सिंधु नदी के संपर्क में आए थे:
- **चीन और यूनान:** प्राचीन चीनी स्रोतों में इसे 'शेन तू' और ग्रीक ग्रंथों में 'इंडिया' कहा गया। मेगस्थनीज ने संपूर्ण उपमहाद्वीप के लिए 'इंडिया' शब्द का प्रयोग किया।
- **फारस और अरब:** फारसी अभिलेखों में 'हिंदू' शब्द का प्रयोग हुआ। अरब और ईरान के स्रोतों में भारत की पूरी भूमि के लिए 'हिंदुस्तान' और यहाँ के निवासियों के लिए 'हिंदू' शब्द का इस्तेमाल किया गया।

- **विस्तारः** शुरुआत में ये नाम सिर्फ सिंधु नदी के आसपास के क्षेत्र के लिए थे, लेकिन समय के साथ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के लिए प्रयुक्त होने लगे।

संक्षेप में कहें तो, भारतवर्ष केवल एक भू-भाग नहीं, बल्कि हिमालय से समुद्र तक फैली एक ऐसी प्राचीन भौगोलिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक इकाई है, जहाँ विभिन्न जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों के मिलने के बावजूद अंतर्निहित एकता हमेशा कायम रही है।

2. भारत की भौगोलिक विविधता

भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है। इसकी भौगोलिक संरचना में ऊँचे पर्वत, विशाल मैदान, पठार, मरुस्थल, समुद्री तट, द्वीप तथा अनेक प्रकार की नदियाँ और वन पाए जाते हैं। भारत का विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक तथा पश्चिम में अरब सागर से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक है। भौगोलिक परिस्थितियों में इस विविधता के कारण भारत में अलग-अलग प्रकार की जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, कृषि और प्राकृतिक संसाधन पाए जाते हैं। यही भौगोलिक विविधता भारत की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का भी एक महत्वपूर्ण आधार है।

1. भारत की स्थिति एवं विस्तार

भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत, दक्षिण में हिंद महासागर, पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। भारत का क्षेत्रफल लगभग 32.87 लाख वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहाँ उष्णकटिबंधीय से लेकर पर्वतीय जलवायु तक अनेक प्रकार की प्राकृतिक परिस्थितियाँ मिलती हैं। कर्क रेखा भारत के मध्य भाग से होकर गुजरती है, जिसके कारण देश के दक्षिणी भाग में सामान्यतः उष्ण जलवायु का प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

2. भारत के प्रमुख भौतिक प्रदेश

- **हिमालय पर्वतीय क्षेत्र:** हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है। हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। इसकी प्रमुख श्रेणियाँ हिमाद्री, हिमाचल और शिवालिक हैं। हिमालय भारत को मध्य एशिया की ठंडी हवाओं से बचाने में सहायता करता है। गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी महत्वपूर्ण नदियों का उद्गम हिमालयी क्षेत्र से होता है। यहाँ ऊँचे पर्वत, घाटियाँ, हिमनद और घने वन पाए जाते हैं।
- **उत्तरी विशाल मैदान:** हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों से उत्तरी मैदानों का निर्माण हुआ है। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों ने इस मैदान का निर्माण किया है।

यहाँ की भूमि अत्यंत उपजाऊ है। इसलिए यह क्षेत्र भारत के प्रमुख कृषि क्षेत्रों में शामिल है। गेहूँ, चावल, गन्ना और दलहन जैसी फसलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

- **प्रायद्वीपीय पठार:** प्रायद्वीपीय पठार भारत के दक्षिणी और मध्य भाग में फैला हुआ है। यह भारत के प्राचीन भू-भागों में से एक है। दक्कन का पठार, मालवा का पठार और छोटानागपुर का पठार इसके प्रमुख भाग हैं। इस क्षेत्र में कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट और मैंगनीज जैसे खनिज संसाधन पाए जाते हैं। पठारी क्षेत्र की नदियों में नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी प्रमुख हैं।
- **भारतीय मरुस्थल:** भारतीय मरुस्थल मुख्य रूप से राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित है। इसे थार मरुस्थल कहा जाता है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है तथा तापमान में काफी अंतर पाया जाता है। रेतीली मिट्टी और रेत के टीलों के कारण यहाँ की प्राकृतिक परिस्थितियाँ देश के अन्य भागों से अलग हैं। ऊँट यहाँ के प्रमुख पशुओं में से एक है।
- **तटीय मैदान:** तटीय मैदान भारत के पूर्वी और पश्चिमी समुद्री किनारों पर स्थित हैं। पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर के किनारे तथा पूर्वी तटीय मैदान बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित हैं। पूर्वी तट पर महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियों द्वारा बनाए गए विस्तृत डेल्टा पाए जाते हैं। तटीय क्षेत्रों में मछली पालन, नारियल उत्पादन, समुद्री व्यापार और पर्यटन का विशेष महत्व है।
- **द्वीपीय क्षेत्र:** द्वीपीय क्षेत्र भी भारत की भौगोलिक विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बंगाल की खाड़ी में अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तथा अरब सागर में लक्षद्वीप स्थित है। अंडमान-निकोबार में घने उष्णकटिबंधीय वन पाए जाते हैं, जबकि लक्षद्वीप मुख्यतः प्रवाल द्वीपों से बना है।

3. जलवायु की विविधता

भारत की जलवायु मुख्यतः मानसूनी है, लेकिन देश के विभिन्न भागों में जलवायु की काफी भिन्नता दिखाई देती है। हिमालयी क्षेत्रों में सर्दी में अत्यधिक ठंड पड़ती है, जबकि राजस्थान में गर्मियों में तापमान बहुत अधिक हो सकता है। केरल और पश्चिमी तट के कुछ क्षेत्रों में वर्षा अधिक होती है, जबकि राजस्थान के पश्चिमी भाग में वर्षा बहुत कम होती है। भारतीय जलवायु में मानसून की महत्वपूर्ण भूमिका है। दक्षिण-पश्चिम मानसून भारत के अधिकांश भाग में वर्षा लाता है। कृषि, जल संसाधन और अर्थव्यवस्था काफी हद तक मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती है।

4. मिट्टी एवं वनस्पति की विविधता

भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। इनमें जलोढ़ मिट्टी, काली मिट्टी, लाल एवं पीली मिट्टी, लेटराइट मिट्टी और मरुस्थलीय मिट्टी प्रमुख हैं। जलोढ़ मिट्टी उत्तरी मैदानों में पाई जाती है और कृषि के लिए

बहुत उपयोगी है। काली मिट्टी मुख्य रूप से दक्कन के पठार में मिलती है और कपास की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसी प्रकार भारत में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, पर्णपाती वन, कांटेदार वन, पर्वतीय वन और मैंग्रोव वन पाए जाते हैं।

5. नदियों एवं जल संसाधनों की विविधता

भारत में अनेक बड़ी और छोटी नदियाँ हैं। इन्हें मुख्यतः हिमालयी नदियों और प्रायद्वीपीय नदियों में बाँटा जाता है। गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी हिमालयी नदियों में वर्षभर जल की उपलब्धता रहती है। दूसरी ओर नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती हैं। नदियाँ सिंचाई, पेयजल, जलविद्युत, मत्स्य पालन और परिवहन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनके कारण अनेक सभ्यताओं और नगरों का विकास भी हुआ है।

6. भौगोलिक विविधता का मानव जीवन पर प्रभाव

भारत की भौगोलिक विविधता का सीधा प्रभाव लोगों के जीवन पर पड़ता है। अलग-अलग क्षेत्रों में जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों के अनुसार कृषि, भोजन, वस्त्र, आवास और व्यवसाय में अंतर दिखाई देता है। पर्वतीय क्षेत्रों में बागवानी और पशुपालन महत्वपूर्ण है, जबकि मैदानों में कृषि का विशेष महत्व है। तटीय क्षेत्रों में मछली पालन और समुद्री व्यापार विकसित हुए हैं तथा खनिज-समृद्ध पठारी क्षेत्रों में खनन और उद्योगों का विकास हुआ है। भौगोलिक परिस्थितियों ने भारत में विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों और जीवन-शैलियों के विकास में भी योगदान दिया है।

भारत की भौगोलिक विविधता उसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। हिमालय, उत्तरी मैदान, पठार, मरुस्थल, तटीय क्षेत्र और द्वीप सभी मिलकर भारत की भौगोलिक संरचना को विशिष्ट बनाते हैं। जलवायु, मिट्टी, नदियों, वनस्पति और प्राकृतिक संसाधनों की विविधता ने यहाँ अलग-अलग प्रकार की कृषि, अर्थव्यवस्था और जीवन-शैलियों को जन्म दिया है। इसलिए भारत को समझने के लिए उसकी भौगोलिक विविधता को समझना अत्यंत आवश्यक है।

3. प्राचीन भारत के स्रोतों का वर्गीकरण

प्राचीन भारत के इतिहास को समझने और जानने के लिए हमारे पास विभिन्न प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। इन स्रोतों के आधार पर ही इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन किया है। इन सभी स्रोतों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में बांटा गया है: पहला साहित्यिक स्रोत, दूसरा पुरातात्विक स्रोत, और तीसरा विदेशी यात्रियों के विवरण।

1. साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोत वे स्रोत हैं जो लिखित रूप में पाए जाते हैं। इन्हें आगे दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है: धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य।

- **धार्मिक साहित्यः** इसके अंतर्गत वेद, पुराण, महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत, तथा बौद्ध और जैन ग्रंथ शामिल हैं। इन ग्रंथों से उस समय के समाज, राजाओं की शासन प्रणाली और धार्मिक मान्यताओं की विस्तार से जानकारी मिलती है।
- **लौकिक साहित्यः** इसके अंतर्गत ऐसे ग्रंथ आते हैं जो किसी विशेष धर्म से जुड़े नहीं हैं, जैसे कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कालिदास के नाटक, और बाणभट्ट की हर्षचरित। इन रचनाओं से राजनीति, शासन और उस काल की आम जनता के जीवन की स्पष्ट जानकारी मिलती है।

2. पुरातात्विक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत वे स्रोत होते हैं जो जमीन की खुदाई और पुरानी भौतिक वस्तुओं के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। यह स्रोत पूरी तरह से विश्वसनीय माने जाते हैं क्योंकि इनमें बदलाव संभव नहीं होता। इसमें मुख्य रूप से अभिलेख, मुद्राएं और स्मारक शामिल हैं।

- **अभिलेखः** अभिलेख पत्थरों, धातुओं या मिट्टी के बर्तनों पर उत्कीर्ण मिलते हैं। सम्राट अशोक के शिलालेख इसका सबसे उत्तम उदाहरण हैं, जिनसे उनके शासन काल और नीतियों का पता चलता है।
- **मुद्राएं (सिक्के):** प्राचीन काल के सिक्के सोने, चांदी, तांबे और कांसा के होते थे। इन सिक्कों से राजाओं के समय, उनके साम्राज्य की आर्थिक स्थिति और व्यापारिक संबंधों की जानकारी मिलती है।
- **स्मारक और भवनः** पुराने मंदिर, स्तूप, विहार और नगरों के अवशेष उस काल की कला, स्थापत्य और सामाजिक उन्नति को दर्शाते हैं।

3. विदेशी यात्रियों के विवरण

प्राचीन काल में कई विदेशी यात्री, व्यापारी और राजदूत भारत आए थे। उन्होंने यहां रहकर जो देखा, उसे अपने ग्रंथों और यात्रा वृत्तांतों में दर्ज किया। इन्हें मुख्य रूप से यूनानी, चीनी और अरबी यात्रियों में बांटा जा सकता है।

मेगस्थनीज की पुस्तक इंडिका, फाह्यान और ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत, और अल-बरूनी का विवरण इसका प्रमुख उदाहरण है। इन विदेशी लेखकों के विवरण से हमें यह पता चलता है कि बाहर के लोग प्राचीन भारत को किस रूप में देखते थे और यहां की सामाजिक व्यवस्था कैसी थी।

इस प्रकार, साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक स्रोत और विदेशी यात्रियों के विवरण- ये तीनों मिलकर प्राचीन भारत के इतिहास को समझने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं।